स्वामी विवेकानन्द-शताब्दी-जयन्ती-प्रकाशन

श्रीश्यामनाम-संकीर्तनम्

(अनुवाद तथा स्वरलिपि के साथ)



प्राप्ति स्थान :—

श्रीरामकृष्ण अद्वैताश्रम

वाराणसी ।

प्रकाशक :—
स्वामी अपूर्वानन्द
अध्यक्ष, श्री रामकृष्ण अद्वैताश्रम
वाराणसी-१ (उ. प्र.)

पुर्नमुद्रण व्यय ७५ पै०

●

●

प्रथम संस्करण का समर्पण

बम्बई-निवासी प्रसिद्ध वंशी-वादक स्वर्गीय पन्नालाल घोष की स्मृति में यह प्रकाशन भगवान् श्रीकृष्ण के श्रीचरणों में अर्पित किया गया है।

प्रथम संस्करण — १२ जून १९६३
द्वितीय परिवर्धित संस्करण — २४ सितम्बर १९६५
तृतीय संस्करण — ९ सितम्बर १९७६

●

मुद्रक :—
श्री विश्वनाथ दत्त,
दी इउरेका प्रिंटिंग वर्क्स (प्रा०) लि०
गोदौलिया, वाराणसी।

प्रथम प्रकाशन २५००
द्वितीय ,, २२५०
तृतीय ,, १२५०

निवेदन

हमारे विचार से, वर्तमान युग में अखिल-भारतीय 'हिन्दू-धर्म का रूप 'भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का जीवन' ही है। उनके जीवन की अद्‌भुत घटनाएँ तथा उनकी सार्वभौम भारतीय भाव का आश्रय करके ही, क्या व्यवहारिक क्षेत्र में, क्या हमलोगों के दैनन्दिन जीवन में हिन्दुधर्म ओतप्रोत रूप में विकसित हुआ है। श्रीकृष्णचन्द्र केवल 'गीताकार' अथवा कुरुक्षेत्र के श्रेष्ठ नायक ही नहीं थे, अपितु सम्पूर्ण हिन्दूधर्म उनके जीवन की विचित्र लीलाओं तथा वाणियों का अवलम्बन करके ही मूर्तिमान हुआ है ! कृष्ण भगवान् ही हिन्दूधर्म का विराट रूप है। भारतीय धर्म, संस्कृति, साहित्य, सङ्गीत, शिक्षा, शिल्प तथा वास्तुकला ये सभी श्रीकृष्ण-जीवन को केन्द्र मानकर ही अंकुरित हुए हैं तथा हिन्दुओं के राष्ट्रीय जीवन में भी हम श्रीकृष्णचन्द्र के जीवनरूपी स्रोत से ही नव प्रेरणा प्राप्त कर सकें हैं !

कंस के कठोर कारागार में उनके जन्म से लेकर प्रभास-क्षेत्र में व्याघ के शर से विद्ध होकर स्वधाम के प्रति महाप्रयाण तक उनके जीवन की प्रत्येक छोटी बड़ी घटना अपना एक वैशिष्ट्य रखती हुई अनुपम माधुर्य-मण्डित बन गयी है। श्रीकृष्णचन्द्र के जीवन की किसी भी घटना का विचार तथा कीर्तन करने पर हमारा अन्त करण एक दिव्य सौरभ से परिपूर्ण हो उठता है, और केवल यही भावना होती है—वे तो स्वयं भगवान् हैं, एकमात्र ईश्वर में ही यह सब सम्भव है !

यद्यपि श्रीकृष्ण 'वर्णाश्रम धर्म के प्रवर्तक' कहे जाते हैं तथापि उन्होंने धर्म के क्षेत्र में जिस साम्यवाद का प्रचार किया है उसके अनुसार ईश्वर-लाभ के पक्ष में सभी स्तरों के मनुष्यों को समान अधिकार दिया गया है। उसी प्रकार सभी धर्मों तथा मतमतान्तरों के बीच में समन्वय-स्थापन करना उनके उदार जीवन की एक महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है।

"श्रीश्यामनाम-संकीर्तन" नाम से प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तिका की रचना रामकृष्णमिशन तथा मठ के अन्यतम संन्यासी स्वामी गुणातीतानन्दजी ने की है। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर देहत्याग पर्यन्त भिन्न-भिन्न घटनाओं का १ से १०८ पदावलियों में वर्णन किया गया है। भाषा शुद्ध सरल तथा भावपूर्ण है। इसमें वर्णित घटनाएँ श्रीमद्भागवत, महाभारत तथा पुराणादिकों से समर्थित हैं। मूल रचना के साथ श्रीजयदेव-कविकृत "श्रीकृष्ण-स्तव" तथा श्रीदशावतारस्तोत्रम् भी जोड़ दिये गये हैं, जिससे लीला-पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण के जीवन पर स्निग्ध प्रकाश पड़ गया है। राजा-कुलशेखर-विरचित मुकुन्दमालास्तोत्र के उद्धृत अंश श्रीरामकृष्ण-चरित्र को समुज्ज्वल करते हैं। प्रणाम-श्लोक विभिन्न स्तोत्रों से संकलित किये गये हैं।

युगावतार श्रीरामकृष्णदेव ने कहा था कि इस युग में नारदीय भक्ति ही भगवद्लाभ का सहज मार्ग है। श्रीभगवान् नामगुणगान तथा लीलाकीर्तन द्वारा सत्वर प्रसन्न होते हैं और श्रीभगवान् के चरणों में अचल भक्तिलाभ होने से भक्त का मानव-जीवन धन्य-धन्य हो जाता है। भगवान् की लीला तथा

महिमा के कीर्तनरूपी माध्यम से भक्ति-रसास्वादन द्वारा चित्त को विशुद्ध करने के लिए हम भी भक्तगणों के साथ श्रीश्यामनाम-संकीर्तन करेंगे।

"ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र, मरुत् (इत्यादि देव) जिनकी दिव्यस्तोत्रों से स्तुति करते हैं, सामवेदीय ब्राह्मणगण वेद, वेदांग, पद, क्रम तथा उपनिषदों के द्वारा जिनकी महिमा का गान करते हैं; योगिगण ध्यान-निरत तथा तद्गतचित्त होकर जिनका दर्शन करते हैं तथा देव और असुर-गण भी जिनका अन्त नहीं जानते उस परम देव को नमस्कार है"।

विनीत
स्वामी अपूर्वानन्द

श्रीभगवान् की कृपा से सुयोग मिलने पर "श्रीश्यामनाम-संकीर्तनम्" का अनुवाद, सुर, ताल तथा स्वरलिपि के साथ प्रकाशित करने की इच्छा है।

द्वितीय संस्करण के विषय में निवेदन—

इस संस्करण में "श्रीश्यामनाम-संकीर्तनम्" का सरल मूलानुगामी अनुवाद तथा सुर ताल के साथ स्वरलिपि दी गई है।

इसी स्वरलिपि के अनुसार ही श्रीरामकृष्ण मठ तथा मिशन की शाखाओं में श्रीश्यामनाम-संकीर्तन गाया जाता है।

'हे गोपालक, हे कृपासिन्धु, हे लक्ष्मीपति, हे कंसारी, हे गजराजोपरी अपार-करुणाशाली, हे माधव, हे रामानुज, हे

त्रिजगद्गुरो, हे पुण्डरीकाक्ष, हे गोपीवल्लभ ! आप हमारा पालन-पोषण करें। मैं आपके बिना और किसी को नहीं जानता।

जो ललाट पर कस्तूरी का तिलक, वक्ष-स्थल में कौस्तुभ-मणि, नासाग्र में उज्ज्वल मुक्ता, करतल में वेणु, हाथ में कंकण, सर्वाङ्ग में हरिचन्दन तथा कण्ठ में मुक्तावली धारण करते हुए गोपियों के द्वारा परिवृत है उन गोपश्रेष्ठ की जय हो।''

इस पुस्तिका के प्रकाशन में अनेक सहृदय लोगों से सहायता प्राप्त हुई है। उन सभी के प्रति हमारा हार्दिक धन्यवाद।

विनीत प्रकाशक

तृतीय संस्करण का निवेदन

लगभग १२ वर्षों के बाद यह तृतीय संस्करण मुद्रित हुआ है। इन कई सालों में अनेक प्रार्थियों को विमुख होना पड़ा है। धनाभाव के कारण नया संस्करण नहीं छापा जा सका। एक धर्मप्राण व्यक्ति की वदान्यता के फलस्वरूप आंशिक आर्थिक सहायता पाकर ही इस तृतीय संस्करण की १२५० प्रतियाँ छापी जा सकी हैं। भविष्य में पुनः मुद्रण की आशा से कुछ मूल्य रखा गया है। जिन महानुभाव भक्त ने इस संस्करण का आंशिक खर्च दिया है, उन्हें मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

विनीत
स्वामी अपूर्वानन्द
९-९-७६

प्रार्थना

मुकुन्दमाला-स्त्रोत्रम्

वन्दे मुकुन्दमरविन्ददलायताक्षं,
कुन्देन्दु-शङ्ख-दशनं, शिशुगोपवेशम् ।
इन्द्रादि-देवगण-वन्दित-पादपीठं
वृन्दावनालयमहं वसुदेव-सूनुम् ॥१॥

श्रीवल्लभेति वरदेति दयापरेति
भक्तप्रियेति भवलुण्ठनकोविदेति ।
नाथेति नागशयनेति जगन्निवासे-
त्यालापिनं प्रतिदिनं कुरु मां मुकुन्द ॥२॥

कमल-दल-सदृश जिनके नेत्र हैं, कुन्दपुष्प, चन्द्रमा तथा शंख तुल्य शुभ्रवर्ण जिनकी दन्त पंक्ति है, जिन्होंने गोपबालक का वेश धारण किया है, जिनके पादपीठ को इन्द्र इत्यादि देवगण नमस्कार करते हैं, ऐसे वसुदेवपुत्र वृन्दवनवासी मुकुन्द को मैं नमस्कार करता हूं ॥१॥

हे मुकुन्द भगवन् ! आप मुझे ऐसा बना दीजिये कि मैं निरन्तर आपको—'हे लक्ष्मीपति ! हे वर देनेवाले ! दयालु! भक्तों के प्रिय, संसार के हृदय को आकृष्ट करने में कुशल ! हे नाथ ! हे शेष-शयन ! जगत् के निवास-स्थान !' इस प्रकार पुकारूँ ॥२॥

जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोऽयं
जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः।
जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलाङ्गो
जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः ॥३॥
नास्था धर्मे न वसुनिचये नैव कामोपभोगे
यद्भाव्यं तद्भवतु भगवन् ! पूर्वकर्मानुरूपम्।
एतत्प्रार्थ्यं मम बहुमतं जन्मजन्मान्तरेऽपि
त्वत्पादाम्भोरुहयुगगता निश्चला भक्तिरस्तु ॥४॥

देवकीपुत्र कृष्णदेव की जय हो। यादव-कुल के प्रदीप स्वरूप कृष्ण भगवान् की जय हो। (कोमलाङ्ग) कोमल शरीर वाले मेघश्याम कृष्ण की जय हो। भूभार हरण करने वाले मुकुन्द (मुक्तिदाता) कृष्ण की जय हो ॥३॥

हे प्रभो ! धर्म की ओर मेरी आस्था नहीं है, धन दौलत तथा भोगविलास की ओर आदर नहीं है। पूर्वजन्म में किये गये कर्मों के अनुसार जो होगा सो हो। इस जन्म में तथा भावी जन्म-परम्परा में भी आपके चरणकमलों में अटल भक्ति रहे इस प्रकार की प्रार्थना करना ही मुझे अच्छा लगता है ॥४॥

वन्दना

वन्दे वंशीधरं कृष्णं स्मयमान-मुखाम्बुजम् ।
पीताम्बर-धरं नीलं माल्य-चन्दन-भूषितम् ॥१॥
राधाचित्तचकोरेन्दु-सौंदर्य-सुमहोदधिम् ।
परात्परतरं देवं ब्रह्मानन्द-कृपानिधिम् ॥२॥

प्रणाम

ॐ श्रीनारदोद्धवादि-पार्षदगोपगोपीगण-
श्रीराधासमेत-श्रीकृष्णपरमात्मने नमः ॥ १ ॥

वंशी (वांसुरी) धारण करने वाले, जिनका मुखकमल ईषत् हास्ययुक्त है, जिन्होंने पीताम्बर धारण किया है, जो नीलवर्ण तथा पुष्पमाला-चन्दन से अलंकृत हैं, जो राधा के चित्तरूपी चकोर पक्षी के लिये चन्द्रवत् आनन्द देने वाले हैं, जो सुन्दरता के महासागर हैं, ऐसे श्रेष्ठों से भी श्रेष्ठ देव ब्रह्मानन्द-स्वरूप, कृपासागर श्रीकृष्ण भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ ॥१॥२॥

ॐ, श्रीनारद उद्धव इत्यादि पार्षदों से तथा गोप, गोपियों और श्रीराधा से युक्त श्रीकृष्ण परमात्मा को नमस्कार ॥१॥

श्रीजन्म-लीला

१	सत्यसनातनसुन्दर	श्याम
२	नित्यानन्द-घनेश्वर	श्याम
३	लक्ष्मीसेवितपदयुग	श्याम
४	सुरमुनिवरगण-याचित	श्याम
५	भूभारोद्धरणार्थित	श्याम
६	लोकबन्धु-गुरु-वाचक	श्याम
७	धर्म-स्थापन-शीलन	श्याम
८	स्वीकृतनरतनु-सुरवर	श्याम

---

१ श्रीकृष्ण भगवन्! आप सत्यस्वरूप अनाद्यनन्त तथा (अत्यन्त) सुन्दर हैं।

२ आप अविनाशी आनन्द से परिपूर्ण ईश्वर हैं।

३ लक्ष्मी आपके चरण-युगल की सेवा करती हैं।

४ देवलोक तथा सर्वश्रेष्ठ मुनिलोक आपकी प्रार्थना करते हैं।

५ पृथ्वी पर खलों के भार को हटाने के लिये आपकी अभ्यर्थना की जाती है।

६ आपका नाम (श्याम) लोक-मित्र तथा जगद्गुरु इस अर्थ का वाचक है।

७ हे श्याम! धर्म संस्थापन करना आपका स्वभाव है।

८ आपने नरदेह को स्वीकार तो किया है परन्तु वस्तुतः आप सर्वश्रेष्ठ ईश्वर हैं।

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ।

९ मायाधीश्वर-चिन्मय श्याम
१० यादवकुल-सम्भूषण श्याम

श्रीगोकुल-लीला

११ नन्द-यशोदा-पालित श्याम
१२ श्रीवत्सांकितबालक श्याम
१३ मारित माया पूतन श्याम
१४ शकटासुर-खल-भञ्जन श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ।

१५ दामोदर-गुण-मन्दिर श्याम

---

९ आप माया पर अधिकार रखनेवाले तथा ज्ञानमय हैं।
१० आप यदुवंश के अलंकार स्वरूप हैं।
११ हे श्याम ! आपका पालन-पोषण श्रीनन्द तथा यशोदा माई ने किया है।
१२ बाल्यावस्था में ही आपका वक्षःस्थल भृगु ऋषि के पद-चिह्न-वत्स-से अंकित है।
१३ माया रूप लेकर (आपका नाश करने के लिये) आई पूतना का आपने विनाश किया है।
१४ (कंस के भेजे) दुष्ट शकटासुर का आपने नाश किया है।
१५ आपके गले में पुष्पमाला शोभायमान है, तथा आप गुणों के निवासस्थान हैं।

१६ यमलार्जुन-तरु-भञ्जन श्याम
१७ गोपीजनगण-मोहन श्याम
१८ अगणित-गुणगण-भूषित श्याम
१९ अघवक-राक्षस-घातक श्याम
२० कालिय-सर्प-विमर्दन श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ॥

श्रीवृन्दावन-लीला

२१ जय वृन्दावन-चरवर श्याम
२२ गोचारण-रत-गोधर श्याम
२३ वर्ह-सुशोभितचूड़क श्याम

---

१६ आपने यमल अर्जुन तरु को वृक्षयोनि से मुक्त किया ।

१७ हे कृष्ण भगवान् ! आप गोपियों के समुदाय को मोहित करने वाले हैं ।

१८ आप संख्यातीत गुणों से अलंकृत हैं ।

१९ आपने अघासुर तथा वकासुर इन राक्षसों का नाश किया ।

२० यमुनास्थित कालिय सर्प को आपही ने दण्ड दिया !

२१ वृन्दावन में विहार करने वाले सर्वश्रेष्ठ श्रीकृष्ण भगवान् की जय हो ।

२२ गायों को चराने में तथा उनकी रक्षा करने में आसक्त श्याम की जय हो ।

२३ जिनकी चूड़ा (शिखण्डक) मयूर-पुच्छ से सुशोभित है ।

२४ गललम्बित-बनमालक श्याम
२५ अग्रज-बलभद्रान्वित श्याम
२६ गोपवधू-हृदय-स्थित श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ॥

२७ सर्वात्मक-सर्वेश्वर श्याम
२८ धेनुक-खर-बध-कारक श्याम
२९ सुरेन्द्र-पूजन-वारक श्याम
३० पर्वत-पूजन-कारक श्याम
३१ सुरगण-प्रार्थित-संगद श्याम
३२ निरुपम-क्रीडन-तोषण श्याम

सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ॥

---

२४ जिनके गले में बनमाला लटक रही है।
२५ जो अपने बड़े भाई बलभद्र से युक्त हैं।
२६ जो निरन्तर गोपियों के हृदय में निवास करते हैं।
२७ जो सभी जीवों के आत्मस्वरूप तथा सभी के ईश्वर हैं उनको नमस्कार।
२८ आपने धेनुक तथा खर रूप राक्षसों का नाश किया।
२९ आपने इन्द्र की पूजा में बाधा उत्पन्न की।
३० आपने गोवर्धन पर्वत की पूजा की।
३१ देवों ने प्रार्थित संग (सहायता) का आपने प्रदान किया।
३२ आप अलौकिक क्रीड़ाओं से आनन्दित होने वाले हैं।

३३	पादाराधक-विधिहर	श्याम
३४	गोपी-भावित-प्रियकर	श्याम
३५	नन्दित-नन्द-सुनन्दन	श्याम
३६	वैकुण्ठेश-नराकृति	श्याम
३७	कालिन्दी-तटचारण	श्याम
३८	मोहन-मुरली-वादन	श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर तक गाइये ।

३९	रास-महोत्सव-खेलन	श्याम
४०	आनन्दामृत-वर्षण	श्याम
४१	बहुविध-शरीर-धारण	श्याम
४२	नानालीला-कौतुक	श्याम

---

३३ ब्रह्मा तथा शिव आपके चरणों की आराधना करते हैं।
३४ गोपियोंने आपको (भक्ति से) अत्यन्त प्रिय माना।
३५ पिता नन्द को आनन्दित करने वाले आप प्रिय पुत्र हैं।
३६ आप नर रूप में प्रकट होने वाले प्रत्यक्ष वैकुण्ठाधीश विष्णु हैं।
३७ हे श्याम ! आप यमुना तीर पर विचरण करने वाले हैं।
३८ आप जगत् को मुग्ध करने वाली वंशी को बजाने वाले हैं।
३९ आप रास-क्रीड़ा-रूपी महोत्सव में खेलने वाले हैं।
४० आप आनन्द रूपी अमृत की वृष्टि करने वाले हैं।
४१ आप अनेक प्रकार के शरीर धारण करने वाले हैं।
४२ आप अनेक प्रकार की कौतुकपूर्ण लीला करने वाले हैं।

४३ ध्वजवज्राङ्कित-मृदुपद श्याम
४४ समस्त-लोकाह्लादक श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ।

४५ वृषभारिष्ट-निपीडक श्याम
४६ विधिगत दर्प-विनाशक श्याम
४७ रुचिर-स्वरूप-जनार्दन श्याम
४८ नील-कलेवर-चिद्घन श्याम
४९ साधक-मति-संशोधन श्याम
५० लीला-नटन-मनोहर श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ।

---

४३ आपके कोमल पद पर पताका तथा वज्र के चिह्न हैं ।

४४ आप समस्त लोकों को आनन्दित करने वाले हैं ।

४५ आप वृषभ (बैल के रूप में) राक्षस रूपी विघ्न का नाश करने वाले हैं ।

४६ आप ब्रह्माजी के गर्व का परिहार करने वाले हैं ।

४७ आप सुन्दर स्वरूप वाले जनार्दन हैं ।

४८ आप नीलवर्ण शरीर वाले तथा ज्ञानमय हैं ।

४९ आप साधकों की बुद्धि को पवित्र करने वाले हैं ।

५० आप लीलार्थ सजकर सुन्दर दिखने वाले हैं ।

५१ गोपीजनगण-पूजित श्याम
५२ राधा-वेणी-शोभक श्याम
५३ अक्रूरार्थित श्लेषद श्याम
५४ कृतरथयानारोहण श्याम
५५ व्रजनारी-कुल-वारित श्याम
५६ सखिगण-दाहदविरहक श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से धनेश्वर श्याम तक गाइये ।

श्रीमथुरा-लीला

५७ मथुरा-पुर-जन-मोहक श्याम

---

५१ आप गोपियों द्वारा पूजित हैं।

५२ आप श्रीराधा की वेणी को सुशोभित करने वाले हैं।

५३ आप अक्रूर के द्वारा अभ्यर्थित आलिङ्गन देने वाले हैं।

५४ आप (मथुरा जाने के लिये) रथ पर आरोहण करने वाले हैं।

५५ आप व्रजाङ्गनाओं के द्वारा रोके गये थे।

५६ आप सखियों (गोपियों) को विरहानल से दग्ध करने वाले हैं।

५७ आप मथुरा-नगरी के लोगों को मोहित करने वाले हैं।

५८ सनकादिक-मुनि-चिन्तित श्याम
५९ मत्त-रजक-गल-घातक श्याम
६० शुभपीताम्बर-धारक श्याम
६१ मालाकार-सुपूजित श्याम
६२ ब्रह्म-सुपूर्ण-परात्पर श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से धनेश्वर श्याम तक गाइये ।

६३ कुब्जालेपन-नन्दित श्याम
६४ वक्रा-कृत्य-ऋजु-कारक श्याम
६५ घातित-गज-मद-लेपन श्याम

---

५८ सनक सनन्दन इत्यादि मुनियों के द्वारा आप का ध्यान किया जाता है ।

५९ आप मदोन्मत्त कंस के रजक का गला घोटने वाले हैं ।

६० आप पवित्र पीताम्बर धारण करने वाले हैं ।

६१ आप मथुरा में मालाकारों (मालियों) के द्वारा भक्ति-पूर्वक पूजित हैं ।

६२ आप पूर्ण ब्रह्म परात्पर-(श्रेष्ठों से भी श्रेष्ठ) स्वरूप हैं ।

६३ आप कुब्जा नामक भक्त (अंगलेपन करिका) द्वारा किये अंगराग लेपन से आनन्दित हैं ।

६४ आप वक्र दोषपूर्ण कार्य को ऋजु (सरल) बनाने वाले हैं।

६५ आप मत्त हाथियों के गर्व को नष्ट करने वाले हैं ।

६६ केशिक-कंस-निषूदन श्याम
६७ पद्मगदाधर-कीर्तित श्याम
६८ उग्रसेन-वर-राज्यद श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ।

६९ रामकृष्ण हरि गिरिधर श्याम
७० माधव केशव नरहरि श्याम

श्रीद्वारका-लीला

७१ मृतगुरु-सूनु-संजीवक श्याम
७२ भीष्मक-बाला-कामित श्याम
७३ द्वारवती-संस्थापक श्याम

---

६६ आप केशिक तथा कंस राक्षसों का नाश करने वाले हैं।
६७ पद्म तथा गदाधर द्वारा आप की स्तुति की गई।
६८ आप कंस के पिता उग्रसेन को राज्य देने वाले हैं।
६९ आप को 'रामकृष्ण' 'हरि' 'गिरधर' नाम से पुकारा जाता है।
७० जिनको माधव, केशव, नरहरि नाम से भी पुकारा जाता है।
७१ आप मरे हुए गुरुपुत्र को संजीव करने वाले हैं।
७२ भीष्मक नामक राजा की कन्या (रुक्मिणी) ने जिनकी कामना की।
७३ आप द्वारका नगरी की स्थापना करने वाले हैं।

७४ रुक्मिण्यर्थ-सुहारक श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाना चाहिये ।

७५ नरकासुर-वध-कारक श्याम

७६ अदिति-समर्पित-कुण्डल श्याम

७७ स्वधर्म-तत्पर-मोक्षद श्याम

७८ शिशुपालासुविघातक श्याम

७९ बाणासुर-भुज-भेदन श्याम

८० दानववर-मधुसूदन श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाना चाहिये ।

८१ चक्रप्रताप-सुदर्शक श्याम

---

७४ आप रुक्मिणी की प्रार्थना के अनुसार उनका अपहरण करने वाले हैं ।

७५ आप नरकासुर का बध करने वाले हैं ।

७६ जिन्होंने अदिति (देवों की माँ) को कुण्डल समर्पण किया ।

७७ आप स्वधर्मतत्पर लोगों को मोक्ष देने वाले हैं ।

७८ आप शिशुपाल दैत्य के प्राण अपहरण करने वाले हैं ।

७९ आप बाणासुर के हाथों को काटने वाले हैं ।

८० आप दानवश्रेष्ठ मधु का संहार करने वाले हैं ।

८१ जिनका 'सुदर्शन' चक्र अत्यन्त प्रतापशाली है ।

८२ पौण्ड्रक-दर्प-विमर्दक श्याम
८३ दग्धकामजनि-दायक श्याम
८४ इन्द्रविधीश-सुसेवित श्याम
८५ सखि-भक्तार्जुन-सारथि श्याम
८६ पाण्डव-कुल-सम्मानित श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाना चाहिये ।

८७ गीतामृत-संदोहक श्याम
८८ भीष्म-प्रतिज्ञा-पालक श्याम
८९ विश्वरूप-संदर्शक श्याम
९० आत्यन्तिक सुख-साधक श्याम

---

८२ आप पौण्ड्रक दैत्य के गर्व का नाश करने वाले हैं।
८३ आप शिवजी के द्वारा जलाये कामदेव को फिर से जिलाने वाले हैं।
८४ आप इन्द्र, ब्रह्मा तथा शिव से पूजित हैं।
८५ आप प्रिय सखा तथा भक्त अर्जुन के सारथि बने थे।
८६ आप पाण्डव कुल के द्वारा सम्मानित हुए हैं।
८७ आपने गीता रूपी अमृत का दोहन किया।
८८ आपने भीष्म की प्रतिज्ञा का (आपको शस्त्र ग्रहण करना पड़ेगा) पालन किया।
८९ आपने (अर्जुन को) विश्वरूप का दर्शन कराया।
९० आप आत्यन्तिक सुख (अर्थात् मोक्ष) को देने वाले हैं।

९१ भक्तकृपार्णव-भर्गद श्याम

९२ शरणागत-जन-तारक श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाना चाहिये ।

९३ भक्त-काम-संपूरक श्याम

९४ मङ्गलकर-गति-दायक श्याम

९५ ऐश्वर्यादिक-षड्गुण श्याम

९६ विश्वाश्रयजन-पालक श्याम

९७ सर्वचराचर-धारण श्याम

९८ पूर्णचराचर-खेलन श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ।

---

९१ आप भक्तों के लिये दयासागर तथा बलप्रद हैं ।

९२ आप शरण में आने वाले लोगोंकी रक्षा करने वाले हैं ।

९३ आप भक्तों की सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हैं ।

९४ आप कल्याणकर अन्तिम स्थान (मोक्ष) को देने वाले हैं ।

९५ आप ऐश्वर्य इत्यादि षड्गुण-सम्पन्न हैं ।

९६ आप विश्व में रहने वाले सभी लोगों का पालन करने वाले है ।

९७ आप सम्पूर्ण स्थावर जंगम जगत् के आधारभूत हैं ।

९८ सम्पूर्ण चरा-चरात्मक जगत् आप की ही लीला है ।

९९ द्वारवती-पुर-प्लावन श्याम
१०० कुरु-यदुकुल-संहारक श्याम
१०१ बदरी-सम्प्रहितोद्धव श्याम
१०२ प्रभास-गमनामोदित श्याम
१०३ योगस्थित-यदुनन्दन श्याम
१०४ सुरगण-वन्दित-मोदन श्याम

॥ सत्य सनातन इ० से घनेश्वर श्याम तक गाइये ।

१०५ देवक्यात्मज-दैवत श्याम
१०६ मोहन-नटनानन्दन श्याम

---

९९ आपने द्वारकापुरी को (अंत में) जलाप्लावित कर दिया ।

१०० आप कुरुवंश तथा यादव कुल के संहारक हैं ।

१०१ आपने उद्धव को बदरिकाश्रम भेजा था ।

१०२ आप प्रभास नामक तीर्थस्थान में जाकर आनन्दित हुए ।

१०३ यदुकुल को आनन्दित करने वाले आप अन्त में योगस्थ हो गये ।

१०४ आप देवगणों से वन्दित (नमस्कृत) तथा उनको (देवगण को) आनन्द देने वाले हैं ।

१०५ आप दैवत-तुल्य देवकी के पुत्र हैं ।

१०६ आप सज-धजकर लोगों को मुग्ध करने वाले तथा उनको आनन्दित करने वाले हैं ।

१०७ सूचित-नरतनु-त्याग श्याम
१०८ जरलुब्धक-शरवेधित श्याम
१०९ भक्त जनार्दन सुन्दर श्याम
११० विश्वसुमंगलकारण श्याम
१११ सत्यसनातन सुन्दर श्याम
११२ नित्यानन्द-घनेश्वर श्याम

भजनम्

११३ त्रिगुणातीत-गुणेश्वर श्याम
११४ राधा-माधव राधा- श्याम
११५ सृष्टिस्थिति-लय-कारण श्याम

---

१०७ आपने 'मैं अब मानव शरीर का त्याग कर दूंगा' यह सूचना दी।

१०८ आपका शरीर जरानामक लुब्धक के बाण से विद्ध हो गया।

१०९ आप भक्तजनों को आकर्षित करनेवाले सुन्दर श्याम हैं।

११० आप बिश्व-कल्याण के कारण-स्वरूप श्याम हैं।

१११ आप सत्य सनातन सुन्दर हैं।

११२ आप नित्यानन्द घनेश्वर श्याम हैं।

११३ आप सत्त्व रज तथा तम इन तीनों गुणों के परे तथा गुणों के स्वामी भी हैं।

११४ आप राधा तथा माधव इस युगलरूप में रहनेवाले श्याम हैं।

११५ आप उत्पत्ति, स्थिति तथा लय इन तीनों अवस्थाओं के कारणस्वरूप हैं।

११६ राधा-माधव राधा- श्याम
११७ गोविन्दाच्युत यादव श्याम
११८ राधा-माधव राधा- श्याम

।। सत्य सनातन इ० से धनेश्वर श्याम तक गाइये ।

११९ नारायण हरि केशव श्याम
१२० राधा-माधव राधा- श्याम
१२१ मुकुन्द मुरहर वामन श्याम
१२२ राधा-माधव राधा- श्याम
१२३ जय जय गोपी-वल्लभ श्याम

---

११६ आप राधा तथा माधव राधा-श्याम हैं।

११७ आप गोविन्द अच्युत तथा (यदुकुलोद्भव) नामों से ख्यात हैं।

११८ आप राधा तथा माधव राधा-श्याम हैं।

११९ आप नारायण, हरि तथा केशव इन नामों से ख्यात हैं।

१२० आप राधा-माधव राधा-श्याम हैं।

१२१ आप मुकुन्द (मुक्तिद) मुरहर (मुर-नाशक) तथा वामन नाम से ख्यात है।

१२२ आप राधा माधव राधा-श्याम हैं।

१२३ हे गोपियों के अत्यन्त प्रिय श्याम ! आपकी जय हो।

१२४ राधा-माधव राधा- श्याम
॥ सत्य सनातन इ० से धनेश्वर श्याम तक गाइये ।
१२५ अनुपम सुन्दर मोहन श्याम
१२६ राधा-माधव राधा- श्याम
१२७ अखिल-रसामृत-सागर श्याम
१२८ राधा-माधव राधा- श्याम
१२९ सत्यसनातन सुन्दर श्याम
१३० नित्यानन्द धनेश्वर श्याम
१३१ राधा-माधव राधा- श्याम
१३२ राधा-माधव राधा- श्याम*

---

१२४ आप राधा माधव राधा श्याम हैं ।
१२५ आप सौन्दर्य में उपमा-रहित तथा भक्तों को मोहित करने वाले हैं ।
१२६ आप राधा-माधव राधा-श्याम हैं ।
१२७ आप सम्पूर्ण रस-रूपी अमृत के सागर-स्वरूप हैं ।
१२८ आप राधामाधव राधा-श्याम हैं ।
१२९ हे श्रीकृष्ण भगवन् ! आप सत्य-स्वरूप अनाद्यनन्त तथा अत्यन्त सुन्दर हैं ।
१३० आप अविनाशी आनन्द से परिपूर्ण ईश्वर हैं ।
१३१ आप राधा तथा माधव इस युगलरूप में रहने वाले श्याम हैं ।
१३२ आप राधा तथा माधव इस युगलरूप में रहनेवाले श्याम हैं ।

---

* यह कलि बार-बार जल्दी से गाना होगा ।

स्तवः

चन्दन-चर्चित-नील-कलेवर-
पीत-वसन-वन-मालिन् !
केलि-चल-न्मणि-कुण्डल-मण्डित
गण्डयुग-स्मित-शालिन् ! ॥१॥
चन्द्रकचारु-मयूर-शिखण्डक
मण्डल-वलयित-केशम् ।
प्रचुर-पुरन्दर-धनुरनुरञ्जित
मेदुर-मुदिर-सुवेशम् ॥२॥

हे हरे ! आपका नीलवर्ण शरीर (शुभ्र) चन्दन से अनुलिप्त है, आपने पीताम्बर तथा वनमाला को धारण किया है। आपके दोनों कपोल क्रीडा करते समय दोलायमान रत्न-जटित कुण्डलों से शोभायमान हैं तथा मुख मन्द-हास्य से सुशोभित है ॥१॥

आपके केश चन्द्रकों से सुन्दर दिखनेवाले मयूर पिच्छों के समुदाय से परिष्कृत हैं तथा आपकी वेष-भूषा (वर्ण संमिश्रण के कारण) अनेक इन्द्रधनुओं से अनुरञ्जित होने से परिपुष्ट तथा आनन्ददायक है ॥२॥

सञ्चरदधर-सुधा-मधुर-ध्वनि-
मुखरित-मोहन-वेशम् ।
वलित-दृगञ्चल-चञ्चल-मौलि-
कपोल-विलोल-वतंसम् ॥३॥

हारममलतर-तारमुरसि-दध-
तं-परिरभ्य विदूरम् ।
स्फुटतर-फेन-कदम्ब-करम्बित-
मिव यमुना-जल-पूरम् ॥४॥

आपकी व्रजाङ्गनाओं के मोहित करनेवाली वंशी हवा का फूत्कार करने से चलायमान अधरोष्ठ मिलित होकर अमृत-तुल्य मधुर स्वरों से मुखरित है तथा जब आप अपनी सुन्दर दृष्टि तिर्यक् करते हैं उस समय आपके चञ्चल शीर्ष तथ कपोलों से आपके आभूषण भी दोलायमान हो जाते हैं ॥३॥

जब आप अपने वक्षस्थल पर दूर तक संलग्न अत्यन्त शुभ्रवर्ण स्थूल मुक्ता माला धारण करते हैं तब ऐसा मालूम होता है मानो स्पष्ट रूप से दिखनेवाली फेन पंक्ति से युक्त यमुना नदी का जल-प्रवाह है ॥४॥

श्यामल-मृदुल-कलेवर-मण्डल-
मधिगत-गौर-दुकूलम् ।
नील-नलिनमिवपीत-पराग-
पटल-भर-वलयित-मूलम् ।।५।।
वदन कमल-परिशीलन-मिलित-मि-
हिरसम-कुण्डल-शोभम्
बन्धुजीव-मधुराधर-पल्लव-
मुल्लसित-स्मित-शोभम् ।।६।।
विशद-कदम्ब-तले मिलितं कलि-
कलुष-भयं शमयन्तम् ।

आपका सांवला (नीलवर्ण) कोमल शरीर पीताम्बरयुक्त होने के कारण ऐसा लगता है मानो नील कमल के मध्यभाग में (कोश में) पीले रंग का पराग पटल फैल गया हो ।।५।।

आपने कान में जो कुण्डल पहने हैं वे ऐसे लगते हैं मानों आपके (प्रफुल्लित) मुख-रूपी कमल का स्पर्श करने के लिये आये हुए सूर्य ! आपके बन्धुजीव (दुपरिया) पुष्पवत् रक्तवर्ण तथा कोमल अधरोष्ठ पर मन्द हास्य की शोभा विकसित हो रही है ।।६।।

जो विस्तृत कदम्ब वृक्ष तल में (राधा से) मिलित है और जो इस कलियुग के पाप-भय को शान्त करते हैं जिनके हाथों

कर-चरणोरसि मणिगण-भूषण-
किरण-विभिन्न-तमिस्त्रम् ॥७॥
शशि किरणोच्छुरितो दर-जलधर-
सुन्दर-सकुसुम-केशम् ।
तिमिरोदित-विधु-मण्डल-निर्मल-
मलयज-तिलक-निवेशम् ॥८॥
श्रीजयदेव-भणित-विभव-द्विगु-
णीकृत-भूषण-भारम् ।
प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुचि-
रं सुकृतोदय-सारम् ॥९॥

पर चरणों तथा वक्ष:स्थल पर पहने हुए रत्नाभूषणों के किरणों से अन्धकार का नाश करते हैं (ऐसे हरि को प्रणाम करो) ॥७॥

जिनके (शुभ्र) पुष्पालंकृत केश ऐसे शोभते हैं मानो चन्द्रमा के किरणों से मिलित श्यामवर्ण सुन्दर बादल ! जिनके भाल-प्रदेश पर लगाया हुआ पवित्र चन्दन का तिलक अन्धकार के मध्य में उदय को प्राप्त होने वाले चन्द्र-मण्डल के समान शोभता है। [ऐसे हरि को प्रणाम करो] ॥८॥

इस प्रकार श्रीजयदेव कवि के उक्ति-वैभव से जिनके शरीर पर पहने हुए आभूषणों की शोभा द्विगुणित हो गई है ऐसे पूर्वजन्मकृत पुण्य-सञ्चय के सारस्वरूप श्रीहरि को अपने हृदय में दीर्घ-काल तक निरन्तर रखकर भक्त-गण प्रणाम करें ॥९॥

श्रीदशावतार-स्तोत्रम्

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्,
विहित-वहित्र-चरित्रमखेदम् ।
केशव-धृत-मीन-शरीर, जय जगदीश हरे ! ॥१॥
क्षितिरतिविपुलतरे तिष्टति तव पृष्ठे,
धरनिधरन-किण-चक्र-गरिष्ठे ।
केशव धृत-कच्छप रूप, जय जगदीश हरे ॥२॥
वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना
शशिनि कलङ्ककलेवर निमग्ना
केशव धृत शूकररूप जय जगदीश हरे ॥३॥

हे मीनावतार धारण करने वाले जगदीश्वर ! केशव ! आपकी जय हो। प्रलय-काल में बढ़े हुए समुद्र जल में बिना क्लेश नौका चलाने की लीला करते हुए आपने वेदों की रक्षा की ॥१॥

हे केशव ! धरित्री का बोझ धारण करने से उत्पन्न चिह्न के कारण कठोर तथा अत्यन्त विशाल आपके पृष्ठ पर पृथ्वी स्थित है—ऐसे कच्छप-रूपधारी जगत्पति हरि की जय हो ॥२॥

चन्द्रमा में निमग्न कलङ्क-रेखा के समान आपके दांत के अग्रभाग पर पृथ्वी संलग्न होकर शोभायमान है—ऐसे शूकर-रूपधारी जगत्पति हरि केशव की जय हो ॥३॥

तव-कर-कमल-वरे-नखमद्भुत-शृङ्गम्
दलित-हिरण्यकशिपूतनुभृङ्गम् ।
केशव धृत-नरहरि-रूप, जय जगदीश हरे ॥४॥

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत-वामन
पद-नख-नीर-जनित जन-पावन
केशव-धृत-वामन-रूप, जय जगदीश हरे ॥५॥

क्षत्रिय-रुधिरमये जगदपगत-पापं
स्नपयसि पयसि शमित-भवतापम् ।
केशव धृत भृगुपतिरूप, जय जगदीश हरे ॥६॥

आपके करकमलों में विचित्र नुकीले नख हैं जिनके द्वारा हिरण्यकशिपु रूपी तुच्छ भ्रमर चीर डाला गया—ऐसे नृसिंह रूपधारी जगत्पति केशव की जय हो ॥४॥

हे अद्भुत-वामनरूपधारी केशव प्रभो ! आपने चरणों को विशाल बनाकर राजा बलि को छला तथा अपने चरण-नखों के जल से लोगों को पवित्र किया—ऐसे जगत्पति हरि की जय हो ॥५॥

हे केशव ! संसार के संताप तथा पाप को नाश करते हुए आपने उस (जगत्) को क्षत्रियों के रुधिररूपी जल से नहलाया—ऐसे परशुराम-रूपधारी जगत्पति हरि की जय हो ॥६॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति कमनीयं
दशमुख-मौलिबलिं रमणीयम् ।
केशव धृत-रघुपति रूप, जय जगदीश हरे ॥७॥
वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं
हलहति-भीति-मिलित यमुनाभम् ।
केशव धृत-हलधररूप, जय जगदीश हरे ॥८॥
निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम्
सदय-हृदय-दर्शित-पशुघातम् ।
केशव धृत-बुद्धशरीर, जय जगदीश हरे ॥९॥

आपने सभी दिशाओं में ईन्द्र, वरुण इत्यादि लोकपालों को प्रसन्न करने के लिये रावण के मस्तकों का सुन्दर बलिदान किया, ऐसे रघुपति रूपधारी जगत्पति केशव की जय हो ॥७॥

जो अपने गौर शरीर पर मेघवर्ण नील वस्त्र धारण करते हैं—जो (वस्त्र) बलराम के हल के भय से आकर मिली हुई (नीलवर्ण) यमुना जैसा लगता है—ऐसे हलधर (बलराम) रूपी जगत्पति केशव की जय हो ॥८॥

दयालु मनुष्यों के प्रति पशुहिंसा की अनिष्टता दिखाते हुए आपने यज्ञों का विधान करनेवाले वेदों की निन्दा की—ऐसे बौद्धावतार के रूप में प्रकट होने वाले जगत्पति केशव की जय हो ॥९॥

म्लेच्छ-निवह्-निधने-कलयसि-करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।
केशव धृत-कल्कि-शरीर, जय जगदीश हरे ॥१०॥
श्रीजयदेवकवेरिदमुदीतमुदारं
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।
केशव धृत-दशविध-रूप, जय जगदीश हरे ॥११॥

प्रणाम

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥१॥

संसार को सताने वाले म्लेच्छों का नाश करने के लिए आपने धूमकेतु जैसा भयानक खड्ग धारण किया—ऐसे कल्कि रूपधारी जगत्पति हरि केशव की जय हो ॥१०॥

हे ! भक्तगण सुनों ! जयदेव कवि के द्वारा वर्णित आनन्ददायक, कल्याणकारक संसार में सारभूत यह दशावतार-स्तोत्र है, इस प्रकार दस रूपधारण करनेवाले जगत्पति केशव की जय हो ॥११॥

(प्रणाम)

परब्रह्म ईश्वर-स्वरूप, गोब्राह्मण-हितकारी, संसार का कल्याण करनेवाले, धेनु, पृथ्वी, वेद की रक्षा करनेवाले कृष्ण भगवान् को बार-बार नमस्कार ॥१॥

अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम् ।
हंसं नारायणं वन्दे श्रीधरं भक्तवत्सलम् ॥२॥

नवीन-नीरद-श्यामं नीलेन्दीवर-लोचनम् ।
वल्लवी-नन्दनम् वन्दे कृष्णं गोपालरूपिणम् ॥३॥

योगीश्वरं यज्ञपतिं यशोदानन्द-दायकम् ।
यमुना-जल-कल्लोलं तं वन्दे यदुनायकम् ॥४॥

(अच्युत) अपने पद से कभी च्युत (भ्रष्ट न होनेवाले केशव) सुन्दर केशवाले, (विष्णु) सर्वव्यापी, (हरि) पापों को नष्ट करनेवाले, सत्यस्वरूप, (जनार्दन) भक्तजनों के पास जानेवाले अथवा जन्म से मुक्त करनेवाले, (हंस) ब्रह्मस्वरूप, (नारायण) (नर) नारायण रूप में प्रकट होनेवाले अथवा भक्तों के पास जानेवाले, भक्तों पर प्रेम करनेवाले, लक्ष्मीपति कृष्ण भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ ॥२॥

नूतन-बादल-सदृश श्यामवर्ण, नील-कमल-सदृश लोचन वाले, (गो-पाल जाति की) यशोदा के पुत्र, गोपाल रूपधारी कृष्ण भगवान् को मैं बन्दन करता हूँ ॥३॥

योगियों के स्वामी, यज्ञों के पति, यशोदा माई को आनन्द देनेवाले, यमुना नदी के जल पर तरङ्ग सदृश, उन यदुवंश नायक कृष्ण भगवान् को मैं वन्दन करता हूँ ॥४॥

श्रीश्यामनाम-संकीर्तनम्

वन्दना

मालकौश—झाँपताल

॥ + २ ० ३
सा ऽ | ज्ञा ऽ सा | सा णा | ण्ा द्ा द्ा |
व ० न्दे ० मू कु न्द म र ०

+ २ ० ३
ण्ा ण्ा | सा सा सा | ज्ञा ऽ | सा सा सा |
वि न्द द ला य ता ० क्ष ० म्

+ २ ० ३
ज्ञा ऽ | ज्ञा ज्ञा ऽ | मा मा | मा मा मा |
कु ० न्दे न्दु ० शं ख द शं नं

+ २ ० ३
मा दा | मा ऽ मा ज्ञा ऽ | सा ऽ सा |
शि शु गो ० प वे ० श ० म्

+ २ ० ३
मा ऽ | ज्ञा ज्ञा ज्ञा | मा मा दा दा ऽ |
इ ० न्द्रा ० दि दे व ग ण ०

+　　२　　　　०　　३
णा ऽ | णा णा ऽ | सें सां | सां सां सां |
व न्दि त ० पा द पी ठ म् ०

+　　२　　　　०　　३
णा रणा | दा दा ऽ | मा मा | मा मा मा |
वृ न्दा व ना ० ल य म हं ०

+　　२　　　　०　　३
ज्ञा मा | ज्ञा मा मा | ज्ञा ऽ | सा ऽ सा ॥१॥
व सु दे ० व सू ० नु ० म्

+　　२　　　　०　　३
॥ मा सा | मा मा ऽ | दा दा | मा मा ज्ञा |
श्री ० व ल्ल ० भे ति व र ०

+　　२　　　　०　　३
मा ज्ञा | दा णा दा | रणा ऽ | णा ऽ ऽ |
दे ति द या ऽ प रे ति ० ०

+　　२　　　　०　　३
सों ऽ | सों सों सों | सों ऽ | रणा रणा ऽ |
म ० क्त प्रि ये ति ० म व ०

+　　२　　　　०　　३
दा दा | दा दा ऽ | मा मा | ज्ञा ज्ञा ज्ञा |
लुं ठ न को ० वि ० दे ० ति

\+ २ ० ३
ज्ञा सॅा सॅा | सॅा ऽ सॅा | ज्ञॅा ज्ञॅा | सॅा सॅा ऽ |
ना ० थे ० ति ना ग श य ०

\+ २ ० ३
णा ऽ | णा ऽ णा | दा दा | मा ऽ मा |
ने ० ति ० ज ग न्नि वा ० से

\+ २ ० ३
णा णा | दा दा दा | मा मा | मा मा मा |
त्या ला पि नं ० प्र ति दि नं ०

\+ २ ० ३
ज्ञा मा | ज्ञा मा मा | ज्ञा ऽ | सा ऽ ऽ ||
कु रु माँ ० मु कु ० न्द ० ०

\+ २ ० ३
|| सा सा | सा सा सा | ण्ा ण्ा | द्ा ऽ दा |
ज य तु ज य तु ० दे ० वो

\+ २ ० ३
ण्ा ण्ा | ण्ा ऽ ण्ा | सा सा | सा सा ऽ |
दे व की ० न न्द नो ऽ य म्

\+ २ ० ३
सा ज्ञा | सा ज्ञा ज्ञा | ज्ञा ज्ञा | मा मा मा |
ज य तु ज य तु ० कृ ष् णो

+	२	०	३
मा मा |	दा दा दा |	मा मा |	ज्ञा ज्ञा ज्ञा |
वृ ष्णि	वं ० श	प्र दी	प ० ०
+	२	०	३
मा दा |	मा दा मा |	दा ऽ |	णा णा णा |
ज य	तु ज य	तु ०	मे घ ०
+	२	०	३
सॊ णा |	दा दा दा |	णा णा |	णा णा ण |
श्या म	लः ० को	म लां	गः ० ०
+	२	०	३
दा दा |	दा दा दा |	दा दा |	मा मा मा |
ज य	तु ज य	तु ०	पृ थ्वी ०
+	२	०	३
ज्ञा मा |	ज्ञा ज्ञा मा |	ज्ञा ज्ञा |	सा सा सा ||
मा र	ना ० शो	मु कु	न्दः ० ०
+	२	०	३
मा मा |	णा णा दा |	दा णा |	सॊ सॊ सॊ |
ना स्या	ध ऽ में	न वसु	नि च ये
+	२	०	३
सॆ सॊ |	णा णा णा |	द ऽ |	मा मा मा
नै व	का मो ०	प ०	भो गे ०

\+ २ ० ३
म मॉ म्ा | मॉ मॉ ज्ञा | मॉ ज्ञॉ | सॉ सॉ सॉ |
य ज्ञा व्यं तद् भ व तु भ ग वन्

\+ २ ० ३
रा रा | दा दा दा | मा मा | मा ऽ मा |
पू र्व क ० र्मा नु रू प ० म्

\+ २ ० ३
ज्ञा मा | रा दा णा | णा णा | णा णा णा |
ए तत् प्रा र्थ्यं म म ब हु म तं

\+ २ ० ३
सॉ सॉ | ज्ञॉ ज्ञॉ ज्ञॉ | सॉ सॉ | सॉ सॉ सॉ |
ज न्म ज न्मा न्त रे ऽ पि ० ०

\+ २ ० ३
रा रा | णा ऽ णा | दा दा | मा मा मा |
तव् पा दा ० म्भो रु ह यु ग ०

\+ २ ० ३
मा दा | दा दा दा | मा ज्ञा | मा ज्ञा सा ||
ग ता नि श्च ० ला भ क्ति र स्तु

———

प्रणामः

इमन-कल्याण

वन्दे वंशीधरं.......... ब्रह्मानन्द कृपानिधिम् ।

॥ सा रा गा गा गा गा गा पा ह्मा ह्मा गा गा गा
व ० न्दे ० ० बं ० शी ध रं कृ ष्णं ०

म्हा म्हा पा पा पा म्हपा पा पा पा पा पा ।
स्म य मा ० न मु खाम्बु जं ० ०

। पा पा धा धा धा पा पा पा पम्हा गा गा गा रा
पी ० ता ० म् ब र ध रं नी लं ऽ मा

गा मा गा ग रा रा रा न्‍ा रा रा सा सा ऽ ।
० ० ल्य च न् द न भू ० षि ० तं ०

। पा ऽ सों सों सों सा सों सों सों सों सा ना ना
रा ० धा चि त्त च को रे ऽ न्दुं ऽ सौ ऽ

ना धा धा पा धा पा पा पा ।
न्द र्य सु म हो द धि ऽ

। पा धा धा पा पा पा पह्मा गा गा गा रा गमा मा ।
प रा त् प र त रं दे ऽ वं ब्र ह्मा ०

। मा गा रा न्‍ा रा रा सा सा सा ॥
न न्द ० कृ पा ० नि धि ऽ

ॐ श्रीनारदोद्धवादि ....नमः

॥ सा रा गा गा गा गा गा गा गा ह्मा ह्मा ह्मा पा ।
ॐ ० श्री ना र दो द्ध वा दि पा र्ष द गो

पा पा पा पा पा पा धा धा पा पा पह्म गा रा
प गो पी ग ण श्री रा धा स मे त श्री

गा मा गा रा रा रा रा न्‌ा रा सा सा ॥
कृ ऽ ष्ण प र मा त् म ने न मः

लीलागान—केदारा-त्रिताल

श्रीश्रीजन्म-लीला

सत्य सनातन सुन्दर श्याम इत्यादि

० १ + ३
॥ सा ऽ रा रा । मा ऽ मा मा । पा पा पा पा । ह्मपा पा पा ऽ
स ० त्य स ना ० त न सु ० न्द र श्या ० म ०

० १ + ३
। धा ऽ सॊ ऽ । धा ऽ पा पा । मा ऽ रा मा । रा ऽ सा ऽ ॥
नि ० त्या ० न ० न्द घ ने ० श्व र श्या ० म ०

० १ + ३
॥ सा ऽ रा ऽ । ध्‌ा ऽ न्‌ा न्‌ा । सा सा रा सा । साऽऽ सा ।
ल ० क्ष्मी ० से ० वि त । प द यु ग श्या ० ० म ।

स ० १ + ३
। मा मा मा मा। पा पा पा पा। ह्मा ऽ धा धा। पा ऽ ऽ पा॥
सु र मु नि व र ग ण या ० चि त श्या ० ० म

० १ + ३
॥ पा ऽ धा पा। सॊ सॊ सॊ सॊ। सॊ ऽ सॊ सॊ। सॆ ऽ ऽ सॊ।
भू ० मा ० रो द् ध र णा ० थि त श्या ० ० म

० १ + ३
। सॊ ऽ धा धा। धा धा रॊ रॊ। सॊ ऽ धा धा। पा ऽ ऽ पा॥
लो ० क ब न् धु गु रु वा ० च क श्या ० ० म

० १ + ३
॥ मा ऽ मा ऽ। मा ऽ मा मा। मा ऽ पह्मा पा। पा ऽ पा।
ध ० र्म ० स्था ० प न शी ० ल न श्या ० म ०

० १ + ३
धा धा सॊ सॊ। धा धा पा पा। मा मा रा मा। रा ऽ सा ऽ॥
स्वी ० कृ त न र त नु सु र व र श्या ० म ०

इसके वाद "सत्य सनातन सुन्दर श्याम" इत्यादि प्रथम तथा द्वितीय पंक्तियाँ गाना चाहिये। अनन्तर नवम्, दशम् पंक्तियाँ, तृतीय चतुर्थ पंक्तियाँ जैसी—एकादश, द्वादश पंक्तियाँ पञ्चम्, षष्ठ पंक्तियाँ जैसी और त्रयोदश, चतुर्दश पंक्तियाँ सप्तम्, अष्टम् पंक्तियाँ जैसी गाने के बाद पुनः 'सत्य सनातन' इत्यादि प्रथम, द्वितीय पंक्तियाँ गाना चाहिये।

इसके अनन्तर पञ्चदश, षोडश पंक्तियाँ तृतीय, चतुर्थ पंक्तियाँ जैसी, और सप्तदश, अष्टादश पंक्तियाँ पञ्चम् तथा षष्ठ पंक्तियाँ जैसी और ऊनविंश विंश पंक्तियाँ सप्तम् अष्टम पंक्तियाँ जैसी गाकर पुनः 'सत्य सनातन' इत्यादि दो पंक्तियाँ गाना चाहिये ।

यही क्रम "श्यामनाम" की समाप्ति तक अर्थात् १३० वीं पंक्ति पर्यन्त चलेगा । अनन्तर "राधा माधव राधा श्याम" कई बार द्रुत लय में गाकर—"चन्दन-चर्चित" इत्यादि स्तव और 'श्रीदशावतारस्तोत्रम्' स्वरलिपि के अनुसार गाना चाहिये ।

अन्त में "नमोब्रह्मण्यदेवाय" इत्यादि प्रणाम भी स्वरलिपि के अनुसार गाना चाहिये ।

सम्पूर्ण "श्रीश्यामनाम संकीर्तनम्" गाने के अनन्तर इसी पुस्तिका के अन्त में दिये हुए भजनों में से एक भजन गाने से हृदय दिव्यानन्दपूरित हो जायगा ।

स्तवः

खम्बाज–मिश्र—त्रिताल

"चन्दन-चर्चित नील कलेवर" इत्यादि

० १ + ३
॥ ना ऽ ना ना । सॊ ऽ सॊ सॊ । ना रॊ सॊ ना । धा ऽ णा धा ।
च ० न्द न च ० र्चि त नी ० ल क ले ० व र

० १ + ३
। पा णा धा पा । मा गा रा गा । पा धा पा पा । ऽ ऽ ऽ ऽ ।
पी ० त व स न व न मा ० लि न् ० ० ० ०

० १ + ३
। र मा ऽ मा मा । मा मा मा मा । रा गा मा पा । पा पा पा पा ।
के ० चि च ल न् म णि कु ण् ड ल म ण् डि त

० १ + ३
। पा धा धा पा । मा गा रा सा । सा रा गा रा । ऽ ऽ ऽ ऽ ॥
ग ण् ड यु ग ० स्मि त शा ० लि न् ० ० ० ०

अब "चन्दन चर्चित नील कलेवर" इत्यादि पुनः गाना होगा।

० १ + ३
॥ मा स मा मा म । मा ऽ मा मा । रा गा मा पा । पा पा पा पा ।
च नु द्र क चा ० रु म यू र शि ख ण् ड क

० १ + ३
। ना ना ना ना । ना ना ना सॊ । धा रॊ सा ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ।
म ण् ड ल ब ल यि त के ० शं ० ० ० ० ०

० १ + ३
। रॊ रॊ रॊ रॊ । रॊ ऽ गॊ रॊ । सॊ सॊ ना ना । सॊ ऽ सॊ सॊ
प्र चु र पु र ० न्द र ध नु र नु ० र ञ्जि त

० १ + ३
। पा ना ना ना । ना ना ना ना । धा रॆं सॆं सॆं ! ऽ ऽ ऽ ऽ ।
मे ० दु र मु दि र सु वे ० श म् ० ० ० ०

० १ + ३
। गॆं ऽ सॆं सॆं । रॆं रॆं ना ना । सॆं ऽ धा धा । पा ऽ पा पा ।
स ० ञ्च र द ध र सु धा ० म धु र ० ध्व नि

० १ + ३
। पा ना ना ना । ना ऽ ना ना । धा रॆं सॆं सॆं । ऽ ऽ ऽ ऽ ।
मु ख रि त मो ० ह न वं ० श म् ० ० ० ०

० १ + ३
। ना ना ना ना । सॆं सॆं सॆं सॆं । ना रॆं सॆं ना । धा ऽ णा धा
व लि त दृ ग ० ञ्च ल च ० ञ्च ल मौ ० लि क

० १ + ३
। पा पा धा पा । मा गा रा गा । पा णा धा पा ऽ ऽ ऽ ऽ ॥
पो ० ल वि लों ० ल व तं ० स म् ० ० ० ०

अनन्तर "चन्दनचर्चित" इत्यादि गाना होगा । इसके बाद इसी क्रमानुसार सम्पूर्ण स्तव गाना चाहिये । अर्थात् "हारममलवर" इत्यादि चतुर्थ श्लोक "चन्द्रक चारु" इत्यादि द्वितीय श्लोक जैसा गाना होगा । और "श्यामल मृदुल" इत्यादि पञ्चम-श्लोक—"सञ्चरदधर" इत्यादि तृतीय श्लोक जैसा गाना चाहिये । अनन्तर "चन्दन चर्चित नील कलेवर" इत्यादि गाकर—

"वदनकमल" इत्यादि षष्ठ श्लोक "चन्द्रकचारु" इत्यादि द्वितीय श्लोक जैसा—और "विशद-कदम्बतले" इत्यादि सप्तम श्लोक—"सञ्चरदधर" इत्यादि तृतीय श्लोक जैसा—और "शशि-किरणोच्छुरित" इत्यादि अष्टम श्लोक "चन्द्रकचारु" इत्यादि द्वितीय श्लोक जैसा, और "श्रीजयदेवभणित" इत्यादि नवम-श्लोक सञ्चरदधर" इत्यादि तृतीय श्लोक जैसा गाना चाहिये ।

श्रीदशावतार-स्तोत्रम् ।

मिश्र राग—त्रिताल

० १ + ३
।। मा पा पा पा । ना ऽ धा ना । सॅा ऽ ऽ ऽ । गा पा पा पा ।
प्र ल य प यो ० धि ज ले ० ० ० प्र ल य प

० १ + ३
। ना ऽ धा ना । सॅा ऽ सॅा सॅा । सॅा ऽ सॅा । सॅा सॅा सॅा सॅा ।
यो ० धि ज ले ० धृ त वा ० न सि वे ० द म्

० १ + ३
। ना ना ना ना । ना ऽ ना ना । धा ऽ ना सॅा । णा धा पा पा
वि हि त व हि ० त्र च रि ० त्र म खे ० द म्

० १ + ३
। पा सॅा सॅा सॅा । सॅा ऽ सॅा ऽ । पा धा णा धा । पा मा गा ऽ ।
के ० श व धृ ऽ त ० मी ० न श री ० र ०

०   २   +   ३
। गा पा गा पा । गा रा रा रा । सा रा गा रा । सा ऽ ऽ ऽ ।
ज य ज य दी ० श ह रे ० ० ० ० ० ० ०

०   २   +   ३
। सा रा मा मा । पा ऽ धा पा । सॉं ऽ ऽ ऽ । ना सॉं ना धा ।
ज य ज ग दी ० श ह रे ० ० ० ज य ज ग

०   २   +   ३
। पा ऽ गा पा । धा ऽ ऽ ऽ । गा पा गा पा । गा रा रा रा ।
दी ० श ह रे ० ० ० ज य ज ग दी ० श ह

०   २   +   ३
। सा रा गा रा । सा ऽ ऽ ऽ । इत्यादि ॥
रे ० ० ० ० ० ० ०

"जय जगदीश हरे" फिर तीन बार गाने के अनन्तर "प्रलय पयोधिजले" जिस सुर में गाया है उसी सुर, ताल तथा लय में द्वितीय श्लोक—"क्षिति-रतिविपुलतरे" इत्यादि भी गाना चाहिये। और तीन-बार "जय जगदीश हरे" गाकर एकादश श्लोक तक प्रत्येक श्लोक प्रथम श्लोक जैसा गाना होगा। और प्रत्येक श्लोक के अन्त में "जय जगदीश हरे" तीन बार एकत्रित स्वर से गाना चाहिये।

प्रणामः—इमन-कल्यान (स्वरलिपि)

॥ सा रा रा गा गा गा गा गा गा ह्मा ह्मा ऽ मा मा पा पा पा पा पा ।
न मो ० ब्र ह्म ण्य दे वा य गो ब्रा ० ह्म ण हि ता ० य च

पा पा पा धा ऽ धा पा पा पा ह्मा ह्मा गा रा रा गा मा ऽ रा ण्
ज ग द्धि ता ० य कृ ष् णा ० य गो ० वि न् दा ० य न

रा रा सा सा सा ॥
मो ० न मः ०

॥ सॅा सॅा सॅा सॅा सॅा सॅा सॅा सॅा सॅा सॅा सॅा सॅा ना ना ना धा धा पा
अ च्यु तं ० के श वं ० वि ष्णुं ० ह रिं ० स त्यं ० ज

पा म्हा म्हा धा पा पा पा ।
ना ० र् द न म् ॥

पा पा धा धा पा पा पा म्हा गा रा गा रा ऽ गा मा गा रा सा
हं सं ० ० ना रा ० य णं वं दे ० श्री ० ध रं भ क्त व

नॊ रा सा सा ॥
त् स ल म्

———

भजन

भजन--कहारवा

तुम्हारे कारण सब सुख छोड़ा अब मोंहि क्यों तरसाओ हो ।
विरह विथा लागि उर अन्तर सो तुम आय बुझाओ हो ॥
अब छोड़न नहिं बनइ, प्रभुजी हँस कर तुरत बुलाओ हो ।
मीरा दासी जनम जनम की अंग से अंग लगावो हो ॥

—मीराबाई

भजन--कहरवा

श्याम सुन्दर मन मन्दिर में आवो आवो ।
हृदय कुञ्ज में राधा नाम की बंशी सुनावो सुनावो ॥
बहत जमुना नयन नीर के, आवो श्याम वोही जमुना तीर पे ।
बैठी बन ठन भक्तिगोपिन, काहे तुम विलमावो आवो आवो ॥
चञ्चल मोहन चरण कमल पे नूपुर बाजवो ।
प्रीति चन्दन मनके मेरे लेके अंग सजावो ॥

विरह की मोर पपिहा बोले
प्रेम की नैया डगमग डोले

आवो कन्हैया रास रचैया, मधुर सूरत दिखलावो आवो आवो ॥

—नजरुल

देश-मिश्र—एकताल

केशव कुरु करुणा दीने, कुञ्जकाननचारी ।
माधव मनोमोहन मोहन-मुरली-धारी ।।
(हरिबोल हरिबोल, हरिबोल मन आमार)
व्रज किशोर कालिय हर, कातर-भय-भञ्जन;
नयन बाँका बाँका शिखि-पाखा, राधिका-हृदि-रञ्जन;
गोवर्धन-धारन, वनकुसुम-भूषण,
दामोदर कंस-दर्प-हारी ।
श्याम रास-रस-विहारी । (हरिबोल हरिबोल इ०)

—गिरिश चन्द्र घोष

भजन—त्रिताल

सुन्दर लाला नन्ददुलाला नाचत श्रीवृन्दावन में ।
भाले चन्दन तिलक मनोहर,
अलका शोभे कपोलन में ।।
शीरे चूड़ा नयन विशाल, कुन्दमाला हिया पर दोले,
पहिरन पीत पटाम्बर बोले रुणु झुनु नूपुर चरनन में ।।
कोई गावत पञ्चम तान, बंशी पुकार राधानाम,
मङ्गल ताल मृदङ्ग रसाल बजावत कोई रङ्गन में ।।
राधा कृष्ण एक तनु होय, निधुवन में जो रङ्ग मचाई,
विश्वरूप जो भगवान् सोहि, लीला करत वृन्दावन में ।

—विश्वरूप गोस्वामी

भजन

सुरट मिश्र—एकताल

चन्द्रकिरण अङ्ग नमो वामन रूप धारी ।
गोपीगन मनमोहन मुञ्ज कुञ्जचारी ॥
व्रजबालक सङ्ग, मदन मान भङ्ग,
उन्मादिनी व्रजकामिनी उन्माद तरङ्ग,
दैत्यछलन नारायण जय-जय गिरधारी;
व्रज विहारी, गोपनारी-मान-भिकारी,
जय राधे श्री राधे

—गिरिशचन्द्र घोष

सिन्धु—झाँपताल

मुरली ध्वनि सुनि आरे मैं जमुना तट ।
तब से हम तन मन जीवन सब बिकाई ।
पवन गतिहीन भईं, जमुना उजान बहे,
विसरि गई गावन शुक सारी, हमारी प्यारी ।
थगित भईं मीन, गौ तृण न चबाये पुन,
वछुवा न पीये थन, ऐसी सुनाई;
छैला गले डोरी लगावे व्रजनारी,
जल भरन भूल गई ठाड़ी सखीरी रोई ॥

—अज्ञात

वृन्दावनी-सारङ्ग—कावाली ।

गावो रे सघने वीणा हरिगुण गावो रे ।
सुरागे सुताने भरा, ललित पीयूष परा,

उदारा मुदारा तारा तहाते मिशावो रे।
गले डोले मृदु हिल्लोले वन माला,
अधरे धरेछे हाँसी लाल बिजली खेला,
गोपकुल तारण, पतित पावन
भज हरि श्री चरण नाम विलावो रे।

—गिरिशचन्द्र घोष

ईमन-भूपाली—कावाली

दिनवा जाते हो बीत है, मन तेरी हो,
क्या कियो मूरख मन, आके दुनियाँ में।
परम-आत्मा परमेश्वर ईश्वर,
शंख चक्र गदा पद्म पीताम्बर,
दीन-बन्धु दयाल दामोदर,
भज ले मूरख मन कृष्ण वासुदेवाय।
जनम लिया जब जननी गरम में,
बार बार जोरी अरज करत है,
आके दुनियाँ में विसर गयो सब,
कहत तानसेन सूनत है॥

—तानसेन

भैरवी—त्रिताला

जागो मोहन प्यारे,
साँवरि सूरत मोरे मन भावे, सुन्दर लाल हमारे

भजन

प्रात समें उठ भानु उदय भयो,
ग्वाल बाल सब भूपत ठाड़े
दरशन के सब भूखे प्यासे, उठियो नन्द किशोर।

—अज्ञात

झिंझिट—एकताला

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई,
शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल होई॥
तात मात भ्रात बन्धु आपनो न कोई।
अब तो बात फैल गई जाने सब कोई॥
संतन संग बैठ बैठ लोक लाज खोई।
छाड़ दई कुलकी मान क्या करेगा कोई॥
असुवन जल सींच सींच प्रेम बीज बोई।
मीरा प्रभु लगन लागी जो होय सो होई॥

—मीराबाई

———————

विष्णु-सूक्तम

ऋग्वेद १।२२।१६-२१

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ।
पृथिव्याः सप्तधर्मभिः ॥१॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
समूढ़मस्य पांसुरे ॥२॥

त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः ।
अतो धर्माणि धारयन् ॥३॥

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥४॥

तद्विष्णो परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।
दिवीव चक्षुराततम् ॥५॥

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते ।
विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥६॥

———

स्वामी अपूर्वानन्द लिखित कतिपय पुस्तकें

संस्कृत ग्रन्थ (देवनागरी लिपी में मुद्रित)

वेदमूर्ति श्रीरामकृष्णः	(जीवन चरित्र तथा उपदेश)	३-००
युगाचार्य विवेकानन्दः	(जीवनी तथा उपदेश)	३-००
श्री रामकृष्णसहस्त्रनामस्तोत्रम् (अर्चना-सहितम्)		६-५०

हिन्दी ग्रन्थ—

१	धर्मप्रसङ्ग में स्वामी शिवानन्द—प्रथम भाग	२-३५
२	धर्म प्रसङ्ग में स्वामी शिवानन्द—द्वितीय भाग	२-३५
३	मां शारदा (जीवन चरित्र)	४-५०
४	श्रीरामकृष्ण और श्री माँ (जीवन चरित्र)	३-४०
५	युगप्रवर्तक विवेकानन्द (जीवन चरित्र)	२-५०
६	श्री रामकृष्णशारदानामामृतम्	१-५०
७	कैलास और मानसतीर्थयात्रा (तिब्बत यात्रा कहानी)	३-००
८	शिवानन्द श्रुतिसंग्रह प्रथम, द्वितीय, तृतीय खण्ड प्रति खण्ड	१०-००
	श्री भद्भगवद्गीता हिन्दी टीका सहित	१२-००

प्राप्ति स्थान

१ रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम, वाराणसी १

२ रामकृष्ण मिशन आश्रम, धनतोली, नागपुर

३ रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम, लखनऊ

४ रामकृष्ण मिशन आश्रम, नई दिल्ली-५५

५ रामकृष्ण मिशन के अन्यान्य केन्द्र।


तन्नो हंसः प्रचोदयात